इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Tribal University
अमरकंटक (म.प्र.) | Amarkantak (M.P.)
(भारतीय संसद में पारित अधिनियम द्वारा स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University Established by an Act of Parliament of India)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्रीय वेबिनार

स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्वांचल (उत्तर प्रदेश) के समाचार पत्रों का योगदान

दिनांक : 30 मई, 2022
समय : सुबह 10 बजे से

गूगल मीट के माध्यम से
https://meet.google.com//wah-gwbr-huy

उद्घाटन-सत्र अतिथि

प्रो. श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी
अध्यक्ष
माननीय कुलपति
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक (मध्यप्रदेश)

प्रो. जगदीश उपासने
मुख्य अतिथि
अध्यक्ष : प्रसार भारती भर्ती बोर्ड
पूर्व कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी रा. पत्रकारिता वि.वि., म.प्र.

प्रो. ओम प्रकाश सिंह
मुख्य वक्ता
डायरेक्टर
महामना म.मो. मा. पत्रकारिता संस्थान,
म. गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उ0प्र0

श्री संजीव कुमार
विशिष्ट अतिथि
संपादक
युगवार्ता पत्रिका
नई दिल्ली

श्री उमेश चतुर्वेदी
विशिष्ट अतिथि
कन्सल्टेंट
प्रसार भारती, नई दिल्ली

समापन-सत्र अतिथि

प्रो. राम मोहन पाठक
मुख्य अतिथि(समापन पत्र)
पूर्व कुलपति, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई
पूर्व कुलपति, नेहरु ग्राम भारती (डीम्ड) वि.वि.,
प्रयागराज,उ.प्र.

प्रो. धीरेन्द्र पाठक
मुख्य वक्ता(समापन पत्र)
विभागाध्यक्ष
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,म. प्र.

वेबिनार संयोजक

डॉ. नागेन्द्र कुमार सिंह
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
अमरकंटक, मध्य प्रदेश

आयोजक

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश

अमरकंटक :

अमरकंटक मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले में स्थित एक पवित्र स्थान है। यह स्थान एक प्रसिद्ध हिल स्टेशन और पवित्र नदी माँ नर्मदा का उद्गम स्थल है। इसके अलावा, यह सोन और जोहिला नदियों का उद्गम स्थल भी है। हरे भरे जंगल से घिरे धार्मिक–आध्यात्मिक स्थल को देखने के लिए हजारों तीर्थयात्री और पर्यटक अमरकंटक आते हैं। रात में हल्की ठंड के साथ मौसम सामान्य रूप से सुहावना रहता है। विश्वविद्यालय अमरकंटक शहर से 15 किमी की दूरी पर स्थित है और 24 किमी दूर निकटतम रेलवे स्टेशन पेंड्रा रोड के माध्यम से रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। निकटतम हवाई अड्डा रायपुर और जबलपुर में उपलब्ध है, जो विश्वविद्यालय से लगभग 220 किमी दूर स्थित है।

शोध पत्र आमंत्रण : इस राष्ट्रीय वेबिनार के लिए, पीजी छात्रों, शोधार्थियों, शिक्षाविदों, मीडियाकर्मियों और अन्य जो मीडिया और शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं, से प्रस्तुतियों के लिए शोध पत्र आमंत्रित हैं।

शोध पत्र भेजने के दिशा निर्देश :

शोध पत्र सिर्फ हिंदी और अंग्रेजी भाषा में ही मान्य होंगे। शोध सारांश 200 से 250 शब्द और पूर्ण शोध पत्र 2500 से 3000 शब्द अधिकतम सीमा है। हिंदी शोध पत्र यूनिकोड फॉट साइज 14 में तथा अंग्रेजी शोध पत्र टाइम्स न्यू रोमन फॉट साइज 12 में एमएस वर्ड फाइल में ही स्वीकार किये जाएंगे।

महत्वपूर्ण दिनांक :

शोध सारांश भेजने की अंतिम तिथि	: 26 मई, 2022
पूर्ण शोध पत्र गेजने की अंतिम तिथि	: 30 मई, 2022
शोध पत्र की भाषा	: हिंदी और अंग्रेजी
शोध पत्र प्रस्तुति माध्यम	: ऑनलाइन
रजिस्ट्रेशन फीस	: निःशुल्क
पुस्तक प्रकाशन शुल्क	: 800/– रु.
ईमेल	: igntuwebinar30@gmail.com

शोधपत्र प्रस्तुत करने वाले सभी अभ्यर्थियों को प्रस्तुति की ई–प्रमाण पत्र दिये जायेंगे।

चयनित शोध पत्रों का प्रकाशन वेबिनार समाप्ति के बाद आईएसबीएन पुस्तक प्रकाशन हेतु भेजा जाएगा। विद्वतजन के प्रकाशित शोध पत्र की पुस्तक प्रति प्रकाशक के खाते में शुल्क जमा करके प्राप्त कर सकते हैं।

रजिस्ट्रेशन लिंक : https://forms.gle/u6DzBTuCCoqbhjSc7

मुख्य संरक्षक
प्रो. श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी
(माननीय कुलपति)

प्रो. मनीषा शर्मा
संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष,
(पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)

डॉ. नागेन्द्र कुमार सिंह
वेबिनार संयोजक
(असि. प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)

– आयोजन समिति –

डॉ. राघवेन्द्र मिश्रा
(प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)

डॉ. कृष्ण मूर्ति बी.वाय.
(असि. प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)

मिस. अभिलाषा तिर्की
(असि. प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)

डॉ. वसु चौधरी
(असि. प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)

रजिस्ट्रेशन व शोध पत्र भेजने से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क

दिनेश नरसिंह मौर्य – 9918787572
विवेक कुमार सिंह – 9532773087
शशांक द्विवेदी – 8349241291

INDIRA GANDHI NATIONAL TRIBAL UNIVERSITY
AMARKANTAK, MADHYA PRADESH (INDIA) - 484887

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
Indira Gandhi National Tribal University
अमरकंटक (म.प्र.) | Amarkantak (M.P.)
(भारतीय संसद में पारित अधिनियम द्वारा स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University Established by an Act of Parliament of India)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्रीय वेबिनार

स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्वांचल (उत्तर प्रदेश) के समाचार पत्रों का योगदान

दिनांक : 30 मई, 2022

आयोजक
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

राष्ट्रीय वेबिनार के विषय में :

पूर्वांचल हिंदी पट्टी के प्रदेशों में हिंदी समाचार पत्रों एवं पत्रकारिता की जन्मस्थली रही है। पूर्वांचल के समाचार पत्र देश की स्वतंत्रता के लिए एक आधार स्तंभ रहे हैं। समाचार पत्र देश की स्वतंत्रता सेनानियों की आत्मा रही है। पूर्वांचल के समाचार पत्र कथ्य, तथ्य नहीं बल्कि स्वतंत्रता सेनानियों की जीवन आत्मा थी। जब मंगल पांडे ने स्वतंत्रता संग्राम का उद्घोष किया, तो क्रांति की लौ पूर्वांचल के समाचार पत्रों में शब्दों के रूप में अनवरत प्रस्फुटित होती रही। जिसका परिणाम यह हुआ कि पूर्वांचल के समाचार पत्रों की अभिव्यक्ति सम्पूर्ण भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन का केन्द्र बन गई। पं. मदन मोहन मालवीय व महात्मा गांधी दोनों महापुरूषों की पत्रकारिता ने स्वतंत्रता आंदोलन का जो बिगुल फूंका उसके परिणति में बनारस समाचार–पत्रों के प्रकाशन का केन्द्र बना। काशी के समाचार–पत्रों में क्रांति लौ ऐसी जगी की गाजीपुर, गोरखपुर, बलिया, देवरिया, जौनपुर, और मिर्जापुर जिलों में स्वतंत्रता सेनानियों के लिए समाचार पत्र अभिव्यक्ति का साधन बन गए ।

1845 में 'बनारस अखबार' साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन गोविंद रघुनाथ थत्ते के संपादकत्व में और 1850 में पंडित रत्नेश तिवारी के रिकार्डर प्रेस से दूसरा समाचार पत्र 'सुधाकर' निकला। साहित्यिक पत्रकारिता की शुरूआत 1867 में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 'कविवचनसुधा' से की थी। 1874 में हरिश्चंद्र मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी हुआ था। नारी स्वाधीनता के लिए भारतेन्दु जी ने 'बालबोधनी' पत्रिका और 1875 में बाबू बालेश्वर ने काशी पत्रिका का प्रकाशन किया था। 19वीं शताब्दी तक पूर्वांचल के काशी से इंदु, जागरण, हंस, सरस्वती, छायापथ, और कमला आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन बनारस में होने लगा था। इन सभी पत्रिकाओं के संपादकत्व की भूमिका में श्यामसुन्दर सेन, महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू शिवपूजन सहाय, मुंशी प्रेमचंद्र, सम्पूर्णानंद और बाबू राव विष्णु पराड़कर आदि ने स्वतंत्रता आन्दोलन की लौ को इन पत्रिकाओं के माध्यम से प्रस्फुटित किया था।

वाराणसी से 03 मार्च 1884 में बाबू रामकृष्ण वर्मा के संपादकत्व में भारत जीवन दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। राष्ट्र चेतना के नायक बाबू शिव प्रसाद गुप्त ने एक दैनिक समाचार पत्र 'आज' के प्रकाशन की योजना तैयार की, जिसने 1 मार्च 1920 में बाबू राव विष्णु पराड़कर के संपादकत्व में अपना मूर्त रूप लिया। यही नहीं हिन्दी प्रदीप, अभ्युदय, प्रताप, हिन्दूस्थान और रणभेरी आदि ऐसे समाचार पत्र पूर्वांचल के केन्द्र रहे, जिनके माध्यम से स्वाधीनता के लिए जनमत को अभिप्रेरित भी किया था। पूर्वांचल के समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय, सामाजिक और राजनैतिक चेतना के संवाहक रूप में तथा अंग्रेजी शासन के विरूद्ध स्वदेश भावना, आत्मशक्ति और स्वतंत्रता की भावना जगाने का कार्य किया था।

स्वतंत्रता आन्दोलनों में समाचार पत्रों की भूमिका जनमानस में स्वाधीनता के बीज का रोपण तथा अग्रेजों से मां भारती को आजाद कराना था। जिनके तथ्य की अभिव्यक्ति स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और कार्य थे, जिन्होंने मां भारती के लिए अपने प्राणों की आहूति दे दी थी। क्या मंगल पाण्डे, क्या पं. राम प्रसाद बिस्मिल और क्या पं. चंद्रशेखर आजाद इन सभी बलिदानियों की शौर्यगाथा के सम्पादकीय लेख की प्रेरणा ने अंग्रेजी शासन के विरूद्ध एक जन आन्दोलन खड़ा कर दिया था। पूर्वांचल के समाचार पत्र देश की आजादी के लिए साधन साध्य थे। जिसके माध्यम से अंग्रेजो के खिलाफ कलम की लड़ाई लड़ गयी थी। देश की आजादी में समाचार पत्रों के इसी महत्वपूर्ण भूमिका से नई पीढ़ी को अवगत कराना और अपने राष्ट्र चेतना को समृद्ध करने के लिए इस वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है जो समसामयिक और प्रासंगिक है।

उद्देश्य :

- पूर्वांचल के समाचार पत्रों का स्वतंत्रता आंदोलन में अवदान को समझना।
- पूर्वांचल के समाचार पत्रों में स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका को स्पष्ट करना।
- समाचार पत्रों में स्वतंत्रता सेनानियों के सूचना संवेदना का समझना।
- स्वतंत्रता आंदोलन में समाचार पत्रों की भूमिका को स्पष्ट करना।
- पूर्वांचल के समाचार पत्रों में स्वतंत्रता सेनानियों के घर की महिलाओं की संवेदना और राष्ट्र भक्ति के भाव को देखना।
- अंग्रजों के विरुद्ध जन आन्दोलनों में समाचार पत्रों की भूमिका को स्पष्ट करना।

उप–विषय :

- स्वतंत्रता आंदोलन और समाचार पत्र।
- अंग्रेजों और अंग्रेजी शासन के विरुद्ध समाचार पत्रों का योगदान।
- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान समाचार पत्रों में अर्थव्यवस्था।
- समाचार पत्रों में पूर्वांचल जनजाति स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान।
- ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ महिलाओं का संघर्ष और पूर्वांचल के समाचार पत्र।
- पूर्वांचल के स्वतंत्रता सेनानियों का समाचारपत्रों में संस्मरण।
- पूर्वांचल के समाचारपत्रों में स्वतंत्रता सेनानियों की साहित्यिक पत्रकारिता।
- स्वतंत्रता के दौर में पूर्वांचल की ग्रामीण पत्रकारिता।
- पूर्वांचल के गावों के अज्ञात स्वतंत्रता सेनानी और उनकी पत्रकारिता।
- अंग्रेजी मीडिया कानून और पूर्वांचल के समाचार पत्र।
- तब और आज के समाचार पत्रों में स्वतंत्रता सेनानियों पर पत्रकारिता की कलम।

विश्वविद्यालय :

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक की स्थापना 2007 में भारत की संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। विश्वविद्यालय ने अपना अकादमिक एवं प्रशासमिक कार्य 2008 से प्रारंभ किया था। विश्वविद्यालय की शैक्षिक गतिविधि भारत के सभी क्षेत्रों में फैली हुई है। विश्वविद्यालय केंद्र सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संरक्षित एवं वित्तपोषित है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य जनजातीय समुदाय के शैक्षिक उत्थान और उनके उच्च शिक्षा के सपनों को साकार करना है। वर्तमान समय में विश्वविद्यालय प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा और शोध उपाधि तक का अध्ययन–अध्यापन करा रहा है। विश्वविद्यालय शैक्षिक सोपान के अपने नित्य नये प्रयोग एवं अनुप्रयोग के माध्यम से वैश्विक आयाम को परिलक्षित कर रहा है। वर्तमान समय में विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में भारत सरकार की स्वालंबी, आत्मनिर्भर और व्यक्तित्व कौशल जैसी राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 से अकादमिक जीवन को प्रस्फुटित करने में अग्रसर हुई है।

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग :

पत्रकारिता और जनसंचार संकाय और विभाग की स्थापना विश्वविद्यालय परिसर में 2012 में हुई थी। विभाग अपनी स्थापना के समय बीजेएमसी पाठ्यक्रम की शिक्षा देना प्रारंभ किया था। 2015 में एमजेएमसी पाठ्यक्रम का संचालन प्रारंभ हुआ। विभाग में सत्र 2016 से पी–एच.डी. प्रोग्राम प्रारंभ हुआ। पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग पत्रकारिता एवं मीडिया के क्षेत्र में नित्य नये–नये सोपान के सपनों को साकार कर रहा है। विभाग के लगभग 100 से अधिक छात्र एवं छात्रायें विभिन्न मीडिया संस्थानों में अपनी सेवायें दे रहे हैं। वर्तमान समय में बीए इन जेएमसी और एमए इन जेएमसी के लगभग 130 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। शोध उपाधि हेतु लगभग 15 शोधार्थी अध्ययनरत हैं। विभाग के दो शोध उपाधि धारक विद्यार्थी प्राध्यापकीय सेवा में कार्यरत हैं। विभाग के संस्थापक विभागाध्यक्ष डॉ. नागेन्द्र कुमार सिंह के दिशा निर्देशन में पत्रकारिता और जनसंचार विभाग अपने शैक्षिक नूतन प्रयोग और अनुप्रयोग के माध्यम से नित्य नये शैक्षिक कौशल को प्राप्त किया और कर रहा है। सत्र 2017 से विभाग को एक नई अकादमिक उपलब्धि प्राप्त हुई जब शैक्षिक विद्वत परिषद से विभाग पूर्ण रुप से सुसज्जित हुआ। शैक्षिक परिषद दो प्रोफेसर और चार सहायक प्राध्यापक हैं जिनके ज्ञान गंगा की धारा से विभाग नित्य नये सोपान की अवधारणा गढ़ रहा है।